जागृति

जागृति श्रृंखला–दीनता – भाग 2

डॉ. डेविड प्लॉट

आज हम सामूहिक आराधना में दीनता के विषय चर्चा करेंगे जो किसी भी प्रकार समझौता करने का विषय नहीं है। मैं आज की कलीसिया के लिए उन महत्त्वपूर्ण शब्दों से अपना अध्ययन आरंभ करना चाहता हूं जो ए. डब्लयू टोज़र ने कहेः "मेरे विचार में आज की एकमात्र सबसे बड़ी आवश्यकता है कि निश्चिन्त आडम्बरी धर्मी जन सर्वोच्य परमेश्वर के वस्त्र के घेरे से मन्दिर के भर जाने का दर्शन पाएं। आराधना की पवित्र विधि उसी प्रकार विलोप हो गई है जिस प्रकार परमेश्वर की महिमा ने मन्दिर से प्रस्थान किया था। इसके परिणमस्वरूप हम अपनी युक्तियों की दया पर छोड़ दिए गए हैं और आराधकों का ध्यान केन्द्रित करने के लिए घटिया एवं भड़कीले कार्यकलापों द्वारा सच्ची आराधना की कमी को पूरा कर रहे हैं।"

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आराधकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए परमेश्वर की महानता ही बहुत है। भड़कीले कार्यकलापों की आवश्यकता नहीं है। हमें आज इस सच्चाई को कलीसियाओं में लाना बहुत ज़रुरी है।

हमने पिछले अध्ययन में सामूहिक आराधना में समुदाय की सहभागिता को देखा था–नहेम्याह 12। आज हम सामूहिक आराधना में दीनता पर विचार करेंगे और हमारा बाइबल पाठ है प्रकाशितवाक्य पुस्तक का अध्याय 19। अतः हम पहले इसकी पृष्ठभूमि देखेंगे। यह पुस्तक प्रथम शताब्दी के विश्वासियों के लिए लिखी गई थी क्योंकि वे विश्वास के कारण सताए जा रहे थे। रोम का राजा डोमिशन, एक हत्यारा; कलीसिया पर कहर ढा रहा था। इस सताव का प्रत्यक्ष उदाहरण यूहन्ना है जिसने यह पुस्तक लिखी। उसे डोमिशन ने काला पानी का दण्ड दिया था। हमारी धारणा है कि यह पुस्तक भविष्य से संबन्धित है परन्तु यह पुस्तक यूहन्ना के युग की कलीसिया के वर्तमान से संबन्धित भी थी। प्रकाशितवाक्य की पृष्ठभूमि यही है।

प्रकाशितवाक्य 19:1–10 "इसके बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, "हल्लिलूय्याह! उद्धार और महिमा और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर ही की है। क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं। उसने उस बड़ी वेश्या का, जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया और उससे अपने दासों के लहू का बदला लिया है।" फिर दूसरी बार उन्होंने कहा, "हल्लिलूय्याह! उसके जलने का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा।" तब चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत्

किया, जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, "आमीन! हल्लिलूय्याह!" तब सिंहासन में से एक शब्द निकला, "हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासो, क्या बड़े; तुम सब उसकी स्तुति करो।" फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जन का सा बड़ा शब्द सुनाः "हल्लिलूय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया"– क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं। तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।" तब मैं उसको दण्डवत् करने के लिए उसके पाँवों पर गिर पड़ा। उसने मुझ से कहा, "देख, ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास हूँ जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं। परमेश्वर ही को दण्डवत् कर; क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है।"

ये पद प्रकाशितवाक्य अध्ययन 19 में स्तुति–आराधना की परिकष्ठा हैं और परमेश्वर की केन्द्रितता पर आधारित है। वही अनन्त आराधना का केन्द्र है। आज कलीसिया में यह स्थिति सन्देहात्मक है। परमेश्वर हमारी आराधना का केन्द्र है, इसके तीन कारण हैं।

पहला, क्योंकि वह हमारी आराधना का इच्छुक है। प्र.का. 19:1 में यूहन्ना कहता है, "इसके बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना..." "इसके बाद" से उसके कहने का तात्पर्य क्या है? इसके लिए आपको अध्याय 17 और 18 देखना होगा। वह बेबीलोन के बारे में लिखता है जिसकी तुलना बड़ी वेश्या से की गई है– 19:2। उत्पत्ति अध्याय 11 में बाबुल अर्थात बेबीलोन के गुम्मट के निर्माण का उल्लेख है। वे परमेश्वर के बराबर पहुंचना चाहते थे तो परमेश्वर ने उनके धमण्ड और अहंकार को गिराया था। इन्हीं बेबीलोनवासियों ने यरूशलेम का विनाश किया था और इस्राएल को बन्दी बनाकर ले गए थे। अध्याय 17, 18 में बेबीलोन की संस्कृति उनका वातावरण थी और रोमी साम्राज्य कलीसिया को सता रहा था। अतः सन्देश यहां यह है कि रोम और बाबुल एक दिन नाश होंगे। दूसरी ओर वहां यह भी दिखाया गया है कि उनकी सांसारिकता, धन–सम्पदा और विलासिता मनुष्य को परमेश्वर से दूर करने के लिए एक बड़ी परीक्षा थी। अध्याय 17 और 18 में इसी विलासिता को व्यभिचार कहा गया है। बेबीलोन को बड़ी वेश्या क्यों कहा गया है? देखिए अध्याय 17 पद 1–2, जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे सात कटोरे थे, उनमें से एक ने आकर मुझ से यह कहा, "इधर आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊँ, जो बहुत से पानी पर

बैठी है, जिसके साथ पृथ्वी के राजाओं ने व्यभिचार किया; और पृथ्वी के रहनेवाले उसके व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए थे।"

यह आत्मिक व्यभिचार का चित्रण है– संस्कृति, प्रशंसा, महिमा, पद–प्रतिष्ठा की लालसा, सुखविलास, सांसारिकता का संतोष आदि जो कलीसिया में व्याप्त हैं। यदि उस वातावरण में आपको मसीह के नाम से कष्ट उठाना होता था तो आप पर परीक्षा यह थी कि कहें, "मसीह का अनुसरण उचित नहीं।" प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें यह बता रही है कि उस ख्रीस्त विरोधी वातावरण में भी परमेश्वर अपने विश्वासियों से उपासना चाहता था। हम यहां देखेंगे कि परमेश्वर की यह इच्छा दो रूपों में प्रकट होती है।

सबसे पहले, परमेश्वर अपनी महिमा प्रकट करने के लिए इतिहास को संयोजित करता है। प्रकाशितवाक्य 19 का मुख्य उद्देश्य यह दर्शाना है कि परमेश्वर इस संसार की सर्वोत्तम महिमा से भी अधिक महिमामय है। बेबीलोन यदि कुछ दे सकता है तो वह परमेश्वर की महिमा से कम ही होगा अर्थात बेबीलोन की अपूर्व महिमा परमेश्वर की महिमा के सामने कुछ भी नहीं है– उसकी महानता, उसका सामर्थ्य, उसका आनन्द, उसका संतोष बेबीलोन के वैभव से कहीं अधिक है। संपूर्ण इतिहास में उसने यही प्रकट किया है कि वही एकमात्र है जो भक्ति और उपासना के योग्य है। अतः क्या आप यह समझ रहे हैं कि जब हम सामूहिक आराधना के लिए उपस्थित होते हैं तो हम एक ऐसे परमेश्वर की उपासना कर रहे हैं जो स्वतः ही गौरवान्वित है– उसे मनुष्य द्वारा ऊंचा उठाए जाने की आवश्यकता नहीं? उसकी यही इच्छा है कि संपूर्ण इतिहास में, हमारे संपूर्ण जीवन में, कलीसिया में सब कुछ उसके नाम के महिमान्वन के लिए हो। सब कुछ उसके चारों ओर ही हो। वह अपनी महिमा के लिए ही अस्तित्व में है। हमारी संस्कृति में हम ऐसा करने से चूक जाते हैं क्योंकि वहां हम अपने आप को हर बात का केन्द्र बना लेते हैं। यदि मैं आपसे पूछूं कि यीशु ने पाप से हमारा उद्धार क्यों किया तो हमारा उत्तर होगा, "क्योंकि वह मुझसे प्रेम करता है।" वह हमसे प्रेम क्यों करता है? मसीह हमारे लिए क्रूस पर क्यों मरा? परमेश्वर का हमसे प्रेम करने में एक मुख्य कारण है कि वह हमारे द्वारा स्तुति पाए। इसी कारण यीशु ने हमारे उद्धार के निमित्त जान दी। सब कुछ उसी के लिए है। तो क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर स्वार्थी है? क्या वह आत्म केन्द्रित है? यही धर्मशास्त्र की शिक्षा है। वह अपने से बड़ा किसको रखे? तो क्या हमारे बच्चे सन्डे स्कूल से ऐसे चित्र लाएं जिन पर लिखा है, "परमेश्वर ने स्वयं से ऐसा प्रेम रखा।" यही मनुष्य की रचना का उद्देश्य है कि सृष्टि का केन्द्र मनुष्य नहीं, परमेश्वर हो क्योंकि संपूर्ण सृष्टि का केन्द्र वही है।

आप सोच रहे होंगे कि आराधना में हमारी आवश्यकता है। निःसन्देह परमेश्वर ने इतिहास में अपनी महिमा प्रकट की है परन्तु उसने कलीसिया को इसलिए तैयार किया कि वह उसकी महिमा का आनन्द लें। पद 6 और 7 में स्पष्ट है कि कलीसिया हल्लिलूय्याह कह रही है क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर राज्य करता है। आओ हम आनन्दित और मगन हों और उसकी स्तुति करें। यहां आनन्द उसके महिमान्वन के तुल्य ठहराया गया है। यहां स्मरण रखें कि कलीसिया बेबीलोन के वैभव के मध्य वास कर रही है। अतः वह कहता है कि सच्चा एवं परिपूर्ण आनन्द परमेश्वर की महिमा की स्तुति करने से प्राप्त होता है। परमेश्वर का आत्मा, उसकी महिमान्वन की इच्छा और उसमें हमारा संतोष अलग–अलग नहीं है; यदि परमेश्वर का प्रेम अनन्त है और संपूर्ण प्रेम वही है तो उसके प्रेम प्रदर्शन की सबसे महान विधि क्या है? उसका अपने आप को हमें दे देना। परमेश्वर ने हमें नाशवान सोना–चांदी नहीं दी है। उसने हमें अनन्त प्रेम और उसकी महिमा का आनन्द दिया है। यही कारण है कि भजनकार कहता है।

भजन 148 "याह की स्तुति करो! यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो, उसकी स्तुति ऊँचे स्थानों में करो! हे उसके सब दूतो, उसकी स्तुति करोः हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति करो! हे सूर्य और चंद्रमा उसकी स्तुति करो, हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी स्तुति करो! हे सब से ऊँचे आकाश, और हे आकाश के ऊपरवाले जल, तुम दोनों उसकी स्तुति करो! वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसी ने आज्ञा दी और ये सिरजे गए। और उसने उनको सदा सर्वदा के लिये स्थिर किया है; और ऐसी विधि ठहराई है, जो टलने की नहीं। पृथ्वी में से यहोवा की स्तुति करो, हे मगरमच्छों और गहिरे सागर, हे अग्नि और ओलो, हे हिम और कुहरे, हे उसका वचन माननेवाली प्रचण्ड बयार! हे पहाड़ों और सब टीलो, हे फलदाई वृक्षो और सब देवदारो! हे वन–पशुओं और सब घरेलू पशुओ, हे रेंगनेवाले जन्तुओ और हे पक्षियो! हे पृथ्वी के राजाओ, और राज्य राज्य के सब लोगो, हे हाकिमो और पृथ्वी के सब न्यायियो! हे जवानो और कुमारियो, हे पुरनियो और बालको! यहोवा के नाम की स्तुति करो, क्योंकि केवल उसी का नाम महान् है; उसका ऐश्वर्य पृथ्वी और आकाश के ऊपर है। उसने अपनी प्रजा के लिये एक सींग ऊँचा किया; यह उसके सब भक्तों के लिये अथात् इस्राएलियों के लिये और उसके समीप रहनेवाली प्रजा के लिये स्तुति करने का विषय है। याह की स्तुति करो!"

यह भजन व्यक्त करता है कि परमेश्वर की महानता क्यों हमारी आराधना का केन्द्र होना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी हमारी आराधना का केन्द्र न हो, नहीं तो हम अपनी रचना के अनन्त उद्देश्य से चूक जाएंगे। उसकी आराधना करने पर ही हम अपने जीवन के सर्वोच्य आनन्द को प्राप्त करेंगे। परमेश्वर हमारी आराधना की कामना करता है। दूसरा, वह हमारी आराधना के योग्य है। परमेश्वर की महानता हमारी

आराधना का केन्द्र हो क्योंकि वह हमारी आराधना के योग्य है। यहां हम देखते हैं कि यूहन्ना कैसे इस विषय को कि परमेश्वर हमारी आराधना की कामना करता, विकसित करता है। मैं चाहता हूं कि आप इस अध्याय 19, में परमेश्वर की विशेषताओं पर ध्यान दें। सबसे पहले, वह उद्धारकर्ता है। वह आरंभ ही से उद्धारकर्ता है। उद्धार परमेश्वर का है। यह उद्धार संपूर्ण इतिहास का दृश्य है। उत्पत्ति 3 से प्रकाशितवाक्य 19 तक परमेश्वर मनुष्यों का उद्धारकर्ता है। वह अपने अनुग्रह और दया से मनुष्य का अपने से मेल कराता है। उसने मनुष्य के लिए उद्धार उपलब्ध करवाया है। वह उद्धारकर्ता है। अध्याय 19 इसकी परिकाष्ठा है।

दूसरा, वह महिमामय है। आप यहां देखेंगे कि हल्लिलूय्याह शब्द चार बार आया है। पुराने नियम में यह शब्द एक प्रचलित शब्द है परन्तु नये नियम में नहीं, संपूर्ण नये नियम में "हल्लिलूय्याह" केवल यहीं काम में लिया गया और परमेश्वर की स्तुति एवं महिमान्वन पर बल देता है। परमेश्वर अपनी प्रजा को मिस्र के दासत्व से निकाल कर प्रतिज्ञा के देश में लाया था जिसकी आभारव्यक्ति में भजनकार ने भजन 115 लिखा। यूहन्ना इसी रूपक द्वारा हमारे उद्धार का वर्णन करते हुए कहता है कि हमें उसका महिमान्वन एवं स्तुति करना आवश्यक है। इस कारण वह हल्लिलूय्याह शब्द का उपयोग करता है।

तीसरा, वह सर्वशक्तिमान है। उद्धार, महिमा और सामर्थ्य परमेश्वर के हैं। अध्याय 17, 18 में व्यक्त बेबीलोन, दुष्टता और कष्टों के संदर्भ में अध्याय 19 परमेश्वर और उसके सामर्थ्य को उभारता है। केवल परमेश्वर में सामर्थ्य है कि दुष्टता और कष्टों पर जय पाए। वह सर्वशक्तिमान है। उद्धार, महिमा और सामर्थ्य परमेश्वर के हैं।

चौथा और पांचवा, दोनों साथ–साथ हैं– वह सत्य एवं धर्मी है। पद 2 में वह कहता है, "उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं।" अध्याय 19 में परमेश्वर की स्तुति का कारण है, "उसने बड़ी वेश्या का... न्याय किया।" क्योंकि अध्याय 17 पद 6 में लिखा है, "मैं ने उस स्त्री को पवित्र लोगों का लहू और यीशु के गवाहों का लहू पीने से मतवाली देखा।" बेबीलोन ने ईश्वर के भक्तों को घात किया था। अब जब यहां परमेश्वर द्वारा बदला लेने की बात आती है तो आपके कान खड़े हो जाते हैं परन्तु स्मरण रखें यह परमेश्वर का निष्पक्ष न्याय है। वह अन्याय के प्रति शान्त नहीं रहता है। भजन 149 में परमेश्वर के इसी गुण का गुणानुवाद है। यह पापों का दण्ड नहीं है। इसका हमारे सुसमाचार प्रचार से सीधा संबन्ध है। ज़रा सोचें कि प्रभु से रहित जन कैसे परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं! क्या इससे हमें प्रेरणा नहीं मिलती कि परमेश्वर के अनुग्रह और उसकी दया को मनुष्यों तक पहुंचाएं जैसी परमेश्वर की इच्छा है। अतः अध्याय 19 में उसका न्याय और उसका सत्य आराधना का केन्द्र है।

छठा, वह अनन्त है। "हल्लिलूय्याह! उसके जलने का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा।" अर्थात उसका दण्ड अनन्त है। उसका सत्य अनन्त है। मैं आपसे एक बात साफ कहना चाहता हूं कि यदि आप यह सोचते हैं कि पाप का अनन्त जीवन पर प्रभाव नहीं पड़ता तो यह बैरी का भ्रम है। सत्य तो यह है कि पाप पर परमेश्वर का दण्ड अवश्य भारी है साथ ही उसका अनुग्रह भी अनन्त है। हम उसकी स्तुति करते हैं क्योंकि वह अनन्त है।

वह सामर्थी है। पद 6, "हल्लिलूय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है।" डोमिशन, रोम के राजा नें घोषणा की थी कि उसकी उपासना अनिवार्य है। यूहन्ना वहां एक द्वीप पर बैठा मुख्य भूमाग की कलीसिया को लिख रहा है कि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है। नये नियम में पहली बार परमेश्वर के लिए ऐसे प्रभावी शब्द काम में लिए गए हैं और प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना 19 बार इन शब्दों को परमेश्वर के लिए काम में लेता है। वह परमेश्वर को केवल "प्रभु परमेश्वर" नहीं कहता है। परमेश्वर सब मूर्तियों और देवी देवताओं से महान है।

सातवां, वह प्रभुत्वसंपन्न है। वह राज्य करता है, वह सब कुछ अपने नियन्त्रण में रखता है। वह सिंहासन पर विराजमान है। वह स्वर्ग में राज्य करता है। संपूर्ण प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर की प्रभुता व्यक्त है। पहली शताब्दी के मसीही विरोधी वातावरण में आपका विश्वास कैसे अडिग रहे? परमेश्वर परमप्रधान है। वह बेबीलोन, रोम सब पर शासक है। शैतान बान्धा गया है। यही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का सन्देश है।

अन्त में, वह पवित्र है। उसकी दुल्हन के विषय हम चर्चा करेंगे परन्तु पहले हम यह सूची देख लें: वह उद्धारक है, वह महिमा से पूर्ण है, वह सर्वशक्तिमान है, वह सत्य है, वह धर्मी है, वह अनन्त है, वह सामर्थी है, वह प्रभुत्वसंपन्न है, वह पवित्र है। यदि हमारा परमेश्वर ऐसा महान है तो हम उसकी महानता को अपनी आराधना के केन्द्र में क्यों न रखें। हम अधिक से अधिक लोगों को आकर्षित करने के लिए अपनी आराधना को संगीत आदि अन्य बातों से भ्रष्ट क्यों करें? सच्चे आराधक संगीत के भूखे नहीं होते हैं, वे परमेश्वर की महानता के भूखे हैं। वे कर्णभावन प्रचारकों के भूखे नहीं हैं, वे महिमामय, सर्वशक्तिमान, सच्चे एवं धर्मी, अनन्त एवं सामर्थी, प्रभुत्वसंपन्न एवं पवित्र उद्धारकर्ता के भूखे हैं जो उन्हें आम आराधनाओं में नहीं मिलता है। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम उसकी महानता के दर्शन को भ्रष्ट न करें। परमेश्वर का यह रूप देखने पर हम स्वर्ग की भीड़ के तुल्य आराधना करने में सक्षम होंगे।

उसकी महानता देखने के पश्चात उसके उपासकों के आनन्द को भी देखें। पद 5 में वह हमें पुकारता है, "हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासों, क्या छोटे, क्या बड़े, तुम सब उसकी स्तुति करो।" यह सबसे पहली प्रतिक्रिया है, "डरनेवाले।" आराधना में हमें उसका भय मानना है। पद 7, "आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें।"

दूसरा, "हम आनन्दित और मगन हों..." हम क्यों आनन्दित और मगन हों? इसके अनेक कारण हैं, क्योंकि पाप का दण्ड दिया जा चुका है, क्योंकि परमेश्वर राज्य करता है, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है। एक और स्थान पर कहा गया है कि हमें आनन्दित और मगन होना है। क्या आप बता सकते हैं? मत्ती 5:12 "आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था।" परमेश्वर महिमा से पूर्ण है। परमेश्वर ही सब कुछ है इसलिए हमें आनन्दित होना है।

तीसरा, हम उसके लिए तैयार हैं। "उसकी दुल्हन ने अपने आप को तैयार कर लिया है।"

उस युग में विवाह के दो चरण होते थेः पहला चरण था मंगनी अर्थात विवाह के लिए एक दूसरे के साथ वाचा बान्धना फिर दूसरा चरण होता था जब वर अपने साथियों के साथ वधु के घर जाता था और समर्पण संस्कार के बाद उसे घर लाता था। वर–वधु के आगमन पर उत्सव मनाया जाता था। अध्याय 19 को इस प्रकाश में देखें। परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा है कि यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह क्षमा करेगा और हमे सब अधर्म से शुद्ध करेगा और उसे अपना प्रभु स्वीकार करके विश्वास करने पर कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से फिर जी उठाया, हमें उद्धार प्राप्त होता है। अब हमारा एक ही काम है कि हम प्रभु के आगमन के लिए तैयार हो जाएं कि उसके साथ जाकर अनन्त जीवन जीएं। वधु–कलीसिया– अपने वर–प्रभु यीशु के लिए तैयार बैठी है।

परमेश्वर की महानता हमारा ध्यान आकर्षित करती है क्योंकि उसे हमारी आराधना की कामना है और वह हमारी आराधना के योग्य है और अन्त में वह हमें आराधना के द्वारा अपने निकट लाता है। आगे बढ़ने से पहले हम एक बार अध्याय 19 का विपरीत देखें अर्थात मानव केन्द्रित आराधना। पद 10 में यूहन्ना जैसे संत से भूल हो गई। "तब मैं उसको दण्डवत करने के लिए उसके पांवों पर गिर पड़ा।" तब उस स्वर्गदूत ने कहा, "देख, ऐसा मत कर।" हम भी ऐसी ही भूल करते हैं। हम अपनी आराधना विधि के दास हो जाते हैं।

हम आराधकों के दास हो जाते हैं और परमेश्वर को केन्द्र से हटा देते हैं। हमें भक्ति के प्रतिस्थापन से सावधान रहना है।

दूसरा संकट है, भ्रष्ट उद्देश्य। प्रचारक और संगीत निर्देशकों में प्रशंसा पाने की परीक्षा। यूहन्ना 3:30 में यूहन्ना ने कहा था, "वह बड़े और मैं घटूं।" उसकी आराधना में हमें घटना है और उसे बढ़ना है।

अन्तिम संकट है, सफलता का भ्रम। जब हमारी भक्ति परमेश्वर पर केन्द्रित न हो और आराधना के हमारे उद्देश्य भ्रष्ट हो जाएं तब क्या होता है? हम आराधना के पश्चात अपने आप से पूछते हैं, "आराधना कैसी लगी?" "लोगों को आराधना में कैसा लग रहा था?" "सब ठीक था या नहीं?" "क्या हमारा गाना वैसा ही रहा जैसा हमने अभ्यास किया था?" क्या सब कुछ प्रचारक की योजना के अनुसार चला?" "क्या अच्छी भीड़ वहां आई थी?" और मुख्य प्रश्न को भूल जाते हैं, "परमेश्वर हमारी आराधना के बारे में क्या सोचता है?" हमें अपनी आराधना की सफलता इस प्रश्न से हटकर नहीं आंकना चाहिए। हो सकता है कि इस प्रश्न के अनुसार चलने में हमारी कलीसिया का विकास मानव अपेक्षा के अनुसार न हो परन्तु मुख्य प्रश्न यही है।

मानव केन्द्रित आराधना के ये संकट हैं। अब हम प्रकाशितवाक्य 19 में परमेश्वर केन्द्रित आराधना के सामर्थ्य को देखें। उसमें त्रिएक परमेश्वर उपस्थित है। सबसे पहले पिता परमेश्वर हमें आराधना के लिए खोजता है। पद 9, "तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, 'यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं।'"

संपूर्ण धर्मशास्त्र में परमेश्वर पहल करता है। यूहन्ना अध्याय 4 में पिता परमेश्वर उन मनुष्यों को खोजता है जो उसकी उपासना करेंगे। यही प्रकाशितवाक्य अध्याय 19 में व्यक्त है। हम में एक धारणा प्रचलित है कि हमें खोजी संवेदनशील होना है। मेरे विचार में हम मनुष्यों को आकर्षित करने की क्षमता नहीं है परन्तु यह तो निश्चित है कि यदि हमारी आराधना परमेश्वर केन्द्रित है और उसकी महिमा प्रकट करती है तो परमेश्वर खोज का काम करेगा। क्या हम मनुष्यों को परमेश्वर के पास लाने में उससे अधिक ज्ञान रखते हैं? वह तो आदि काल से ही यह काम कर रहा है। यीशु खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया था। वह तो अलौकिक खोजी है और आराधना उसी अलौकिक खोज पर केन्द्रित होती है। मैं चाहता हूं कि इस अध्ययन में हम एक बार फिर 1 कुरिन्थियों 14:24 पर ध्यान दें जहां पौलुस उनके बारें में कह रहा है जो मसीह को नहीं जानते, यदि वे आराधना में आएं तो उन पर क्या प्रभाव पड़ेगाः "यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या बाहरवाला मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख

लेंगे, और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करेगा और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।"

क्या यह एक महान बात नहीं? अविश्वासी आपकी आराधना में आएं तो परमेश्वर को स्वीकार करें! क्या यह हमारी आराधना का लक्ष्य नहीं? परमेश्वर हमें आराधना के लिए खोजता है कि आराधक कहें, "कैसा महान परमेश्वर!" न कि "कैसी बढ़िया आराधना!"

फिर आता है, पुत्र परमेश्वर। वह हमें आराधना की आत्मा देता है। यहां मुख्य बात वधु के शुद्ध और चमकदार मलमल की नहीं है परन्तु उसकी पवित्रता की है जिससे वह आराधना करेगी। यह प्रभु यीशु की धार्मिकता है जो हमें परमेश्वर के अनुग्रह से आवृत करती है, जब हम पापों की क्षमा पाने के लिए उस पर विश्वास करते हैं। वह अपनी धार्मिकता और पवित्रता से हमें ढांक देता है। अतः हम परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं तो मसीह यीशु के गुणों के कारण।

फिर पवित्र आत्मा आराधना के लिए हमारी अगुआई करता है। वह हमें मसीह की महिमा दिखाता है। अब यदि हम इस सत्य से भटक जाएं कि पिता परमेश्वर हमें आराधना के लिए खोजता है और पुत्र हमें आराधना के योग्य बनाता है और पवित्र आत्मा हमें आराधना में अगुआई देता है, तो हम कहां होंगे? बड़ी भीड़, महान मनोरंजन आदि सब व्यर्थ होगा। अतः हमारा आराधना का केन्द्र परमेश्वर की महिमा ही होना है। मैं एक बार फिर टोज़र की बात दोहराता हूं।

"परमेश्वर की आराधना आनन्द है परन्तु यह दीन भी बनाती है और वह मनुष्य जो परमेश्वर के समक्ष दीन नहीं बना, वह परमेश्वर का आराधक कभी नहीं हो सकता। वह नियमनिष्ठ, अनुशासित, दमांशदाता, सभाओं में जानेवाली कलीसियाई सदस्य हो सकता है परन्तु दीन बने बिना वह आराधक नहीं हो सकता है।"

मैं आपसे पूछना चाहता हूं, "क्या हम वास्तव में परमेश्वर की महिमा के प्रेमी हैं? क्या हम वास्तव में उसकी पवित्रता के सामने कांपते हैं? क्या हम वास्तव में उसकी महिमा से मुग्ध हैं? क्या हम उसके सौंदर्य से ऐसे प्रभावित होते हैं कि आराधनालय से निकलने के बाद उपदेश, संगीत आदि की अपेक्षा परमेश्वर की महानता से प्रभावित हों और सोचें कि हम उससे कितना प्रेम करते हैं। और ध्यान दें कि परमेश्वर से बढ़कर हमें इस संसार में संतोष नहीं। हमें उसकी महानता से मुग्ध हो जाना है। मुझे पूरा विश्वास है कि परमेश्वर की

महानता ही हमें आराधना में ध्यान लगाने के लिए पर्याप्त है वरन् हमारा लगाव और परमेश्वर की विनम्रता पूर्वक सराहना करने के लिए बहुत है।"

प्रिय परमेश्वर, मैं इस अध्ययन से और मेरे जीवन और अगुआई में इसके द्वारा लाए गए उत्तरदायित्वों से मैं अभिभूत हुआ जाता हूं। हे परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं कि हम अपनी आंखें तेरी महानता पर केन्द्रित रखें। हमें ऐसे मनुष्य बना जो तेरी महिमा से मुग्ध और तेरे वैभव से मन्त्रमुग्ध हों। हे परमेश्वर हमने तेरे वचन में देखा है कि तेरा वैभव हमें वशीभूत करने के लिए पर्याप्त है। हमें भ्रष्ट भक्ति और भ्रष्ट उद्देश्यों और सफलता के भ्रम से बचा ले कि हम आराधना में केवल तुझे देखें और तरा महिमान्वन करें। हे परमेश्वर हमें दीन बना जिससे कि हम स्वर्ग में उपस्थित भीड़ के साथ गाने योग्य हों, "हलिल्लूय्याह, हमारा प्रभु सर्वशक्तिमान परमेश्वर राज्य करता है। वह प्रभुत्वसंपन्न है, आनादि अनन्त है, वह सर्वशिक्तमान है, वह हमारा उद्धारकर्ता है, वह हमारी स्तुति के योग्य है।"